Q No. विकास के कारक (Factors in Development), पूंजी निर्माण (Capital Formation—भौतिक एवं मानव), प्रौद्योगिकी (Technology) तथा संस्थाएँ (Institutions)

आर्थिक विकास (Economic Development) किसी भी राष्ट्र की समृद्धि, स्थिरता और सामाजिक प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। आर्थिक विकास का अर्थ केवल राष्ट्रीय आय (National Income) या उत्पादन (Production) में वृद्धि नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य लोगों के जीवन स्तर में सुधार, गरीबी और बेरोजगारी में कमी, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, आय के समान वितरण तथा सामाजिक न्याय की स्थापना भी है।

अर्थशास्त्री माइकल टोडारो (Michael Todaro) के अनुसार, आर्थिक विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोगों के जीवन स्तर में सुधार, गरीबी में कमी तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। इसी प्रकार अमर्त्य सेन ने आर्थिक विकास को मानव की क्षमताओं (Capabilities) के विस्तार से जोड़ा है। उनके अनुसार, विकास तभी सार्थक है जब लोगों को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता और अवसर प्राप्त हों।

किसी भी देश का आर्थिक विकास अनेक कारकों पर निर्भर करता है। इनमें पूंजी निर्माण, मानव पूंजी, तकनीकी प्रगति, प्राकृतिक संसाधन, संस्थागत व्यवस्था, उद्यमिता, राजनीतिक स्थिरता तथा सरकारी नीतियाँ प्रमुख हैं। इन सभी कारकों का संतुलित विकास ही किसी राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाता है।

1. विकास के कारक (Factors in Development)

आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विस्तृत अध्ययन निम्नलिखित है–

(1) प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources)

प्राकृतिक संसाधन किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास का आधार होते हैं। भूमि, जल, वन, खनिज, ऊर्जा स्रोत, समुद्री संसाधन तथा जलवायु उत्पादन की मूल आवश्यकताएँ हैं।

महत्व

- कृषि उत्पादन में वृद्धि।
- उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराना।
- ऊर्जा उत्पादन में सहायता।
- निर्यात को बढ़ावा।
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि।

सीमाएँ

केवल प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है। यदि तकनीक, पूंजी और कुशल श्रम उपलब्ध न हों तो संसाधनों का पूरा उपयोग संभव नहीं होता।

(2) मानव संसाधन (Human Resources)

मनुष्य उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यदि जनसंख्या शिक्षित, स्वस्थ और कुशल हो तो वही जनसंख्या आर्थिक विकास की शक्ति बन जाती है।

महत्व

- उत्पादकता में वृद्धि।
- नई तकनीक अपनाने की क्षमता।
- अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा।
- उद्यमिता का विकास।
- राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।

(3) पूंजी निर्माण (Capital Formation)

जब कोई देश अपनी वर्तमान आय का एक भाग बचाकर उसे मशीनों, भवनों, उद्योगों, परिवहन, संचार, सिंचाई तथा अन्य उत्पादन साधनों में निवेश करता है, तो इसे पूंजी निर्माण (Capital Formation) कहा जाता है।

पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की रीढ़ माना जाता है क्योंकि बिना पूंजी के बड़े उद्योग, आधुनिक कृषि, परिवहन तथा आधारभूत संरचना का विकास संभव नहीं है।

पूंजी निर्माण की प्रक्रिया

(i) बचत (Saving)

आय का वह भाग जो उपभोग में खर्च नहीं किया जाता, बचत कहलाता है।

(ii) बचत का संचयन (Mobilisation of Savings)

बचत को बैंक, बीमा कंपनियों, डाकघर, म्यूचुअल फंड तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से एकत्र किया जाता है।

(iii) निवेश (Investment)

एकत्रित बचत को उद्योगों, कृषि, परिवहन, ऊर्जा, शिक्षा तथा अन्य उत्पादक क्षेत्रों में लगाया जाता है।

पूंजी निर्माण का महत्व

- उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।
- रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं।
- राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है।
- औद्योगिकीकरण को गति मिलती है।
- आधुनिक तकनीक अपनाने में सहायता मिलती है।
- निर्यात बढ़ता है।
- गरीबी कम होती है।
- आत्मनिर्भरता प्राप्त होती है।
- आधारभूत संरचना (Infrastructure) का विकास होता है।
- दीर्घकालीन आर्थिक विकास सुनिश्चित होता है।

2. भौतिक पूंजी निर्माण (Physical Capital Formation)

मशीनें, कारखाने, सड़कें, रेलमार्ग, पुल, बंदरगाह, हवाई अड्डे, बिजली संयंत्र, सिंचाई परियोजनाएँ तथा अन्य उत्पादन साधनों का निर्माण भौतिक पूंजी निर्माण कहलाता है।

उदाहरण

- नई फैक्ट्री की स्थापना।
- आधुनिक मशीनों की खरीद।
- राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण।
- रेलवे और मेट्रो परियोजनाएँ।
- बिजली उत्पादन संयंत्र।
- गोदाम और कोल्ड स्टोरेज का निर्माण।
- भौतिक पूंजी निर्माण का महत्व
- उत्पादन में तीव्र वृद्धि।
- उद्योगों का विस्तार।
- परिवहन एवं संचार का विकास।
- लागत में कमी।

भौतिक पूंजी निर्माण की समस्याएँ

- पूंजी की कमी।
- कम बचत दर।
- निवेश की कमी।
- भ्रष्टाचार।
- परियोजनाओं में देरी।
- तकनीकी पिछड़ापन।

3. मानव पूंजी निर्माण (Human Capital Formation)

जब शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा कौशल विकास पर निवेश किया जाता है, जिससे मनुष्य की कार्यक्षमता और उत्पादकता बढ़ती है, तो इसे मानव पूंजी निर्माण कहते हैं।

अर्थशास्त्री थियोडोर शुल्ज तथा गैरी बेकर ने मानव पूंजी को आर्थिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत माना है।

मानव पूंजी निर्माण के प्रमुख साधन

(1) शिक्षा

शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है।

(2) स्वास्थ्य

स्वस्थ व्यक्ति अधिक कार्य करता है और उसकी उत्पादकता अधिक होती है।

(3) तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण

कौशल विकास से श्रमिक आधुनिक मशीनों का बेहतर उपयोग कर पाते हैं।

(4) अनुसंधान एवं विकास (R&D)

नई खोजों और नवाचारों से उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

(5) पोषण एवं सामाजिक सुरक्षा

संतुलित आहार और सामाजिक सुरक्षा मानव संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार करते हैं।

मानव पूंजी निर्माण का महत्व

- श्रम उत्पादकता बढ़ती है।
- आय में वृद्धि होती है।
- बेरोजगारी कम होती है।
- गरीबी घटती है।
- नई तकनीक अपनाना आसान होता है।
- नवाचार को बढ़ावा मिलता है।
- आर्थिक विकास तेज होता है।
- सामाजिक विकास होता है।

4. प्रौद्योगिकी (Technology)

उत्पादन की नई तकनीकों, वैज्ञानिक ज्ञान, आधुनिक मशीनों, स्वचालन (Automation), डिजिटल तकनीक तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के उपयोग को प्रौद्योगिकी कहते हैं।

आर्थिक विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका

- उत्पादन में वृद्धि।
- लागत में कमी।
- गुणवत्ता में सुधार।
- समय की बचत।

- कृषि का आधुनिकीकरण।
- औद्योगिक विकास।
- डिजिटल अर्थव्यवस्था का विकास।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि।
- अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा।
- पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों का विकास।
- भारत में तकनीकी विकास के उदाहरण
- UPI आधारित डिजिटल भुगतान।

5. संस्थाएँ (Institutions)

संस्थाएँ वे संगठन, नियम और व्यवस्थाएँ हैं जो आर्थिक गतिविधियों का संचालन, नियंत्रण और विकास करती हैं। मजबूत संस्थाएँ आर्थिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करती हैं।

प्रमुख संस्थाएँ

- सरकार
- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)
- वाणिज्यिक बैंक
- NABARD
- SEBI
- शिक्षा संस्थान
- न्यायपालिका
- सहकारी समितियाँ
- पंचायत एवं स्थानीय निकाय
- संस्थाओं की भूमिका
- कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना।
- निवेश को प्रोत्साहित करना।
- बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध कराना।
- शिक्षा और स्वास्थ्य का विकास करना।
- उद्योग एवं व्यापार को बढ़ावा देना।
- रोजगार कार्यक्रमों का संचालन।

6. विकास के कारकों का परस्पर संबंध

आर्थिक विकास तभी संभव है जब सभी कारक एक-दूसरे के पूरक बनकर कार्य करें।

भौतिक पूंजी उत्पादन के साधन उपलब्ध कराती है।

मानव पूंजी उन साधनों का कुशल उपयोग करती है।

प्रौद्योगिकी उत्पादन को अधिक कुशल और कम लागत वाला बनाती है।

संस्थाएँ निवेश, कानून, वित्त और प्रशासन का उचित वातावरण प्रदान करती हैं।

सरकारी नीतियाँ इन सभी कारकों का समन्वय करके विकास की गति बढ़ाती हैं।

यदि इनमें से किसी एक कारक की कमी हो, तो आर्थिक विकास बाधित हो जाता है।

निष्कर्ष

आर्थिक विकास एक व्यापक और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें भौतिक पूंजी निर्माण, मानव पूंजी निर्माण, आधुनिक प्रौद्योगिकी, मजबूत संस्थाएँ, गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन, प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग तथा प्रभावी सरकारी नीतियाँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। किसी भी देश की दीर्घकालीन समृद्धि तभी संभव है जब वह शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी नवाचार, आधारभूत संरचना और संस्थागत सुधारों में निरंतर निवेश करे। भारत जैसे विकासशील देश के लिए मानव पूंजी का विकास, तकनीकी प्रगति, डिजिटल परिवर्तन और सुशासन भविष्य के तेज, समावेशी तथा सतत आर्थिक विकास की कुंजी हैं।